आशुतोष शर्मा

गिलहरी

छोटी सी प्यारी सी होती है गिलहरी
भूरे सफेद रंग की होती है गिलहरी
तीन इसकी पीठ पर होती हैं धारी
होती हैं कोमल पूंछ, आवाज़ भी न्यारी
दिखने में भोली, तेज़ होती है गिलहरी।
वह तेज़ दौड़ती हैं, कभी वो फुदकतीं
डर जाती है झट से झाड़ी में दुबकतीं
घबर्राइं सी रहतीं नहीं टिक कर बैठतीं
जब लेटें चारों पैर को पसार लेटती
आपस में खेलती है, लड़ती है गिलहरी।
पेडों पर चढ़ती हैं तो कभी वो उतरतीं
डाली पर लगे फल-सब्ज़ियां को कुतरती
कपड़ो की कतरनें और रुई इन्हें भाती
इन्हीं की खोज में यह हर तरफ जाती
हरियाली हो जहाँ वहाँ रहती हैं गिलहरी।